13

धर्मियों को मिलने वाला प्रतिफल

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया। अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए" (1 पतरस 1:3, 4)।

यीशु की एक रोमांचकारी प्रतिज्ञा है कि "तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है" (मत्ती 5:12; लूका 6:23)। हमें जो मसीही हैं, स्वर्ग में एक जीवन की आशा है (इफिसियों 4:4) जो महिमा में इस जीवन से कहीं बढ़कर है और यह एक ऐसी आशा है, जो मसीही लोगों को दूसरों से श्रेष्ठ बनाती है। और किसी के स्वर्ग के बारे में इतने गीत नहीं होंगे या कोई अपने भविष्य के घर के इतने गीत नहीं गाता होगा। स्वर्ग की हमारी आशा हमें कई परीक्षाओं और परेशानियों में से आनन्द के साथ निकाल देती है, जबकि दूसरे लोग शोक और निराशा में पड़ जाते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 4:13)।

किसी ने निष्कर्ष निकाला है, "मृत्यु के बाद कोई प्रतिफल न भी हो तौ भी मसीही जीवन यहां पर बिताया जाने वाला बेहतरीन जीवन है।" इससे सहमत होते हुए, पौलुस ने लिखा है, "भक्ति सब बातों के लिए लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिए है" (1 तीमुथियुस 4:8)। यही बात यीशु ने सिखाई, "मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं" (यूहन्ना 10:10)। बहुतायत का जीवन समस्याओं के बिना नहीं मिलता। पौलुस ने लिखा है, "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे" (2 तीमुथियुस 3:12)। जो सताव पौलुस ने सहा उसी के कारण वह यह कह पाया, "यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं" (1 कुरिन्थियों 15:19)। मसीह के लिए सही जाने वाली परेशानियों के विषय में उसने लिखा, "यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन-पशुओं से लड़ा, तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, तो आओ, खाएं-पीएं, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे" (1 कुरिन्थियों 15:32; देखें यशायाह 22:13)।

नया नियम हमें इस जीवन से कहीं आगे देखने की अनुमति देता है। यद्यपि अनन्त

निवास के अर्थ में स्वर्ग को वचन में बार-बार या विस्तार से नहीं बताया होने के बावजूद स्वर्ग की आशिषों का संकेत कई बार दिया गया है।

स्वर्ग में एक नये घर की हमारी मसीही आशा ही हमें वह आनन्द दिलाती है (रोमियों 12:12)। यह पुरानी वाचा के अधीन की गई प्रतिज्ञा से उत्तम है (इब्रानियों 8:6; 10:34)। परमेश्वर द्वारा बांधी गई वाचा को पूरा करते रहने पर उन्हें कनान देश के साथ लम्बी आयु और समृद्धि की प्रतिज्ञा दी गई थी (व्यवस्थाविवरण 4:13; 5:33)। यदि हमें दी गई प्रतिज्ञा केवल पुरानी अवस्था में बहाल हुई पृथ्वी का कोई स्थान है, तो नई वाचा में हम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं, हमारी आशा का आधार, इस्राएल से की गई देश देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से उत्तम नहीं हैं (व्यवस्थाविवरण 28:1-14)। परन्तु हमारी आशा स्वर्ग में सदा के लिए एक स्थान पाना है (1 पतरस 1:3, 4) न कि पृथ्वी पर समृद्धि और लम्बी आयु के साथ भूमि का कोई टुकड़ा।

स्वर्ग कैसा है?

बाइबल में वर्णित स्वर्ग को समझने के लिए, पहले एक पाठ में अध्ययन किए गए की तरह कि "स्वर्ग" का इस्तेमाल तीन अलग-अलग क्षेत्रों के लिए किया गया है, हमें यह बात समझनी है कि (2 कुरिन्थियों 12:2-4): (1) आकाश जहां बादल हैं (व्यवस्थाविवरण 11:11) और जहां पक्षी उड़ते हैं (भजन संहिता 79:2), (2) तारों और नक्षत्रों से भरा संसार (उत्पत्ति 1:14-18; व्यवस्थाविवरण 1:10) और (3) परमेश्वर का निवास स्थान, जहां पृथ्वी के छुड़ाए हुए लोग सदा तक रहेंगे (1 पतरस 1:3, 4) स्वर्ग है। इस पाठ में इस अन्तिम हवाले पर बात की जाएगी।

"स्वर्ग का राज्य" अभिव्यक्ति का इस्तेमाल (1) परमेश्वर के अनन्त राज्य (मत्ती 13:43), (2) उद्धार पाए हुओं के लिए तैयार राज्य (मत्ती 25:34) और (3) मसीह के राज्य के लिए किया गया है, जिसके निकट होने का उसने प्रचार किया और दूसरों को प्रचार करने के लिए भेजा। राज्य को "स्वर्ग का राज्य" (मत्ती 4:17); "परमेश्वर का राज्य" (मरकुस 1:15), "मेरा राज्य" (लूका 22:30), और "उसके प्रिय पुत्र का राज्य" (कुलुस्सियों 1:13) कहा गया है। एक करने वाली डोरी जो इन शब्दों में से होकर जाती है, इनके अर्थ को आपस में मिलाती है, क्योंकि हर शब्द स्वर्ग के राज्य का ही अर्थ देता है। मसीह का विशेष शासन जिसके निकट होने का उसने प्रचार किया (मत्ती 4:17), उसके स्वर्गारोहण के साथ आरम्भ हो गया (इफिसियों 1:19-23) और उसके वापस आने तक रहेगा (1 कुरिन्थियों 15:24)। इस पाठ में उस राज्य पर ज़ोर दिया जाएगा, जिसमें उद्धार पाए हुए लोग अपने अनन्त प्रतिफल के रूप में प्रवेश करेंगे (मत्ती 25:34)। यह तो संदर्भ से ही पता चल सकता है कि प्रत्येक पद में किसी शब्द के इस्तेमाल का क्या अर्थ है।

स्वर्ग दिखाई देने वाली चीज़ नहीं अर्थात सांसारिक राज्य नहीं है, इसलिए हमें यह समझ होनी आवश्यक है कि इसके विवरण के लिए प्रयुक्त सांसारिक शब्द केवल इसके आत्मिक शासन की वास्तविकताओं को समझाने के लिए हैं। इस राज्य के बारे में पौलुस ने

लिखा है, ''हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं, परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:18)। यद्यपि परमेश्वर ने स्वर्ग का विवरण सांसारिक शब्दों में दिया है, पर इसे भौतिक नहीं माना जाना चाहिए।

पृथ्वी को एक आत्मिक निवास में बदलकर नया नहीं बनाया जाएगा। ऐसा होने पर उसे जो सिंहासन पर बैठा है, गम्भीरता से नहीं लिया गया, जिसने कहा, ''देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं'' (प्रकाशितवाक्य 21:5)। न ही इस वाक्य का शाब्दिक अर्थ लिया जा सकता था ''फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी ...'' (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

नया यरूशलेम, उद्धार पाए हुओं का नगर पृथ्वी पर की ज्ञात सबसे महंगी चीज़ों के रूप में दिखाया गया है (प्रकाशितवाक्य 21:11-21)। ऐसा विवरण भयभीत कर देने वाला है, जो हमारी मानवीय कल्पना से कहीं बढ़कर है। यही वह तस्वीर है, जो परमेश्वर हम नाशवानों को दिखाना चाहता था। उसके राज्य में महिमा पाने पर हम सब भय से कांप जाएंगे (1 थिस्सलुनीकियों 2:12; इब्रानियों 2:10), उसकी शान और महिमा देखेंगे (रोमियों 8:18) और उस महिमा के सहभागी होंगे (1 पतरस 5:1)। वह ''अपने पवित्र लोगों में महिमा'' पाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)। हम इस बात से भी प्रभावित होंगे कि यह खत्म होने वाला राज्य नहीं है, बल्कि स्वर्ग के लोगों के रूप में ''हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा'' (2 कुरिन्थियों 4:17) उपलब्ध कराएगा। पृथ्वी की तुलना में यह ''एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरने वाला'' (इब्रानियों 10:34), ''एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश'' (इब्रानियों 11:16) है।

स्वर्ग के विषय में अच्छी बात यह है कि यह सदा तक रहेगा और एक समान रहेगा। यह बदलने वाली इस पृथ्वी की तरह नहीं होगा। हमारी आशा ''एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए जो स्वर्ग में रखी है'' (1 पतरस 1:4) है। स्वर्ग वह स्थान है ''जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं'' (मत्ती 6:20; लूका 12:33)। स्वर्ग में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति को एक नया शरीर दिया जाएगा, ''जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है'' (2 कुरिन्थियों 5:1)।

स्वर्ग की सबसे अद्भुत बात परमेश्वर, यीशु, पवित्र आत्मा (प्रकाशितवाक्य 21:3) और उद्धार पाए हुए सब लोगों के साथ अनन्तकाल के लिए हमारी संगति होगी। पृथ्वी की किसी भी संगति की तुलना स्वर्ग में हमारी उस अनन्त संगति से नहीं की जा सकती।

यदि हम एक पल के लिए स्वर्ग की उस महिमा पर ध्यान लगाएं और उस संगति को जो हमें मिलेगी महसूस करें, तो हम वहां जाने के लिए इतने रोमांचित होंगे कि हम हर पल उसी के सपने लेते बिताएंगे, उसी के लिए काम करेंगे और उसी की योजना बनाते रहेंगे। पौलुस ने लिखा है, ''क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं'' (रोमियों 8:18)।

स्वर्ग में ज़्या होगा?

चिह्नों का इस्तेमाल हमें स्वर्ग की बातें समझाने के लिए किया जाता है। स्वर्ग में वे वस्तुएं नहीं होंगी, जिनकी हमें पृथ्वी पर आवश्यकता है, जैसे सूरज, चांद या रोशनी; न ही वहां कोई रात होगी, क्योंकि मेमना स्वयं प्रकाश होगा (प्रकाशितवाक्य 21:23, 25; 22:5)। परमेश्वर के करीब हमारी पहुंच होने का अर्थ यह होगा कि मन्दिर की आवश्यकता नहीं रहेगी, क्योंकि परमेश्वर और मेमना ही मन्दिर होंगे (प्रकाशितवाक्य 21:22)।

हमें सांसारिक भोजन की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि जीवन के लिए वहां जीवन की नदी का जल और जीवन के वृक्ष का फल होगा (प्रकाशितवाक्य 22:1, 2)। हम परमेश्वर से दूर नहीं होंगे, क्योंकि ''वह उनके साथ डेरा करेगा और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा'' (प्रकाशितवाक्य 21:3)। परमेश्वर का और मेमने का सिंहासन वहां होगा जिस कारण, वहां कोई शाप नहीं होगा (प्रकाशितवाक्य 22:3)। हमारे नये निवास स्थान में केवल धर्मी ही होंगे (2 पतरस 3:13)।

हम कैसे होंगे?

हमारी शारीरिक देहों को आत्मिक देहों में बदल दिया जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:44, 51-54)। शारीरिक देहें उस आत्मिक संसार के योग्य नहीं होंगी, जिसमें हम प्रवेश करेंगे, क्योंकि ''मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते'' (1 कुरिन्थियों 15:50)। परमेश्वर का आत्मिक संसार उसके लिए स्वाभाविक है, क्योंकि वह आत्मा है (यूहन्ना 4:24) और स्वर्गदूतों के लिए, क्योंकि वे भी आत्माएं हैं (इब्रानियों 1:14)। हम इस बात को नहीं समझ सकते कि उस क्षेत्र में शरीर कैसा होगा, पर हमें यह आश्वासन दिया गया है ''कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2)। परमेश्वर को देखने के लिए आवश्यक है कि हम उसके क्षेत्र में प्रवेश करें, क्योंकि सांसारिक जीव परमेश्वर को नहीं देख सकते (1 तीमुथियुस 6:16)। यीशु ''अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार, जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा'' (फिलिप्पियों 3:20, 21)। यह सब होने पर, हम ''उसका मुंह देखेंगे'' (प्रकाशितवाक्य 22:4), वह मुंह, जिसे हम में से कोई भी अपनी शारीरिक देहों में देखकर जीवित नहीं रह सकता (निर्गमन 33:20)।

बदल जाने पर, हमें स्वर्गीय जीवों वाली महिमा मिलेगी। हम मसीह की महिमा, आदर और शांति में प्रवेश करके (रोमियों 2:7, 10) उस ''के साथ महिमा पाएंगे'' (रोमियों 8:17)। अपनी नई स्थिति में हम ''अपने पिता के राज्य में सूरज के समान चमकेंगे'' (मत्ती 13:43)। ''और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था, धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:49)।

हम ''अनन्त जीवन'' पाए हुए अनन्त जीव होंगे, जो कभी नहीं मरेंगे (लूका 20:36; प्रकाशितवाक्य 21:4)। ''अनन्त जीवन'' का अर्थ जीवन की अवधि के साथ-साथ जीवन

की गुणवत्ता भी है, जिसे वर्तमान सम्पत्ति (देखें यूहन्ना 3:36; 5:24; 6:47, 54; 1 यूहन्ना 5:11, 13) या उस जीवन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जो यीशु में विश्वास करने और उसकी सेवा करने के प्रतिफल के रूप में हमें मिलेगा (मत्ती 19:29; मरकुस 10:30; लूका 18:30; यूहन्ना 10:28; रोमियों 2:7; 6:22; 1 तीमुथियुस 6:12)।

अधर्मी मृतक भी जीवित रहेंगे। परन्तु उनके अनन्त अस्तित्व को ''अनन्त जीवन'' नहीं माना जाना चाहिए; बल्कि इसे ''अनन्त मृत्यु'' कहा जाना चाहिए जो दूसरी मृत्यु है, यानी आग की झील (प्रकाशितवाक्य 20:14)।

हम क्या कर रहे होंगे?

परमेश्वर ने हमें पूरा विवरण नहीं बताया है कि हम स्वर्ग में क्या कर रहे होंगे, और शायद इसका अच्छा कारण है। हो सकता है कि हम आत्मिक जीवों के काम करने पर विचार कर उत्तेजित न हों, क्योंकि हम तो शारीरिक हैं। एक छोटे बच्चे के रूप में, मुझे उम्मीद थी कि मैं कभी वयस्क नहीं बनूंगा, क्योंकि मुझे लगता था कि वयस्कों के काम उकताने वाले होते हैं। हमारी प्रसन्नता आम तौर पर भौतिक वस्तुओं पर आधारित होती है, जिस कारण हमें स्वर्ग की आत्मिक बातों पर रोमांचित होने में कठिनाई हो सकती है।

स्वर्ग में हमें केवल आनन्द का ही ज्ञान होगा, क्योंकि परमेश्वर ''उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं'' (प्रकाशितवाक्य 21:4)। इस जीवन के वे सांसारिक पहलू जिन के कारण हम दुखी हुए या श्रापित हुए हैं, वहां नहीं होंगे (प्रकाशितवाक्य 22:3)। उद्धार पाए हुए लोग हमारे प्रभु के ''आनन्द'' में प्रवेश करेंगे (25:21, 23)। हमें इस जीवन के परिश्रमों से विश्राम मिलेगा (प्रकाशितवाक्य 14:13; इब्रानियों 4:8-11)।

अनन्तकाल तक हम आनन्द करेंगे, क्योंकि हम पिता के साथ (प्रकाशितवाक्य 21:3), यीशु के साथ (यूहन्ना 12:26; देखें यूहन्ना 14:3; 17:24; 2 कुरिन्थियों 5:6-8; फिलिप्पियों 1:23; कुलुस्सियों 3:4; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17), स्वर्गदूतों के साथ (लूका 9:26), और उद्धार पाए हुए लोगों के साथ होंगे (मत्ती 13:43)। हम आनन्द से यीशु की सेवा (प्रकाशितवाक्य 22:3) और सदा तक उसके साथ राज करेंगे (2 तीमुथियुस 2:12; प्रकाशितवाक्य 22:5)। वह पवित्र लोगों में महिमा पाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:10)। जिसका अर्थ यह है कि यीशु की उद्धार पाए हुए लोगों की ओर से बहुत महिमा और भक्ति होगी (फिलिप्पियों 2:10, 11)। स्वर्ग प्रेम, संगति और आनन्द का एक अद्‌भुत स्थान होगा।

स्वर्ग में कौन जाएगा?

यीशु ने कहा, ''जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मत्ती 7:21)। ''सिद्ध बनकर, [वह] अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:9)। अनन्त जीवन पाने वाले लोग वे हैं ''जो सुकर्म में स्थिर

रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं'' (रोमियों 2:7) और ''हर एक ... जो भला करता है'' (रोमियों 2:10)।

स्वर्ग की महिमा गुण के आधार पर नहीं दी जाती, बल्कि अनुग्रह के आधार पर दी जाती है (2 थिस्सलुनीकियों 2:16)। हम इस बात की शेखी नहीं मार सकेंगे कि हमने अपने शुभ कर्मों से स्वर्ग को कमाया है (इफिसियों 2:8, 9; तीतुस 3:5)। हम केवल यही कह पाएंगे कि ''हम निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना चाहिए था वही किया है'' (लूका 17:10)।

स्वर्ग हमें एक मीरास के रूप में दिया जाएगा (देखें प्रेरितों 20:32; देखें 26:18; इफिसियों 1:11, 14, 18; 5:5; कुलुस्सियों 1:12; 3:24; इब्रानियों 9:15; 1 पतरस 1:4)। मीरास कमाई नहीं जाती; बल्कि यह एक उपहार होता है। जो लोग वारिस हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं (रोमियों 8:16, 17; गलातियों 3:6, 7, 29)। जल और आत्मा से नये सिरे से जन्म लेकर (यूहन्ना 3:5), हम परमेश्वर से जन्म लेते हैं (यूहन्ना 1:12, 13)। इस प्रकार हम विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर की संतान और स्वर्ग के वारिस बनते हैं (गलातियों 3:26, 27)।

जो लोग स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे वे, वे लोग हैं जो परमेश्वर के विरुद्ध बगावत करके अनैतिक जीवन बिताते हैं (1 कुरिन्थियों 6:9, 10; गलातियों 5:19-21)। वे यीशु के लहू के द्वारा धोए नहीं गए हैं, इसलिए वे अशुद्ध ही रहेंगे, जिस कारण स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते (प्रकाशितवाक्य 21:27; 2 पतरस 3:13)। जो लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे वे, वे लोग हैं, जिन्हें यीशु के लहू के द्वारा धोया गया है (इफिसियों 5:25-27; कुलुस्सियों 1:19-22)।

क्या सब को एक समान पुरस्कार मिलेगा?

कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि परमेश्वर पुरस्कारों के अलग-अलग स्तर देगा। इस निष्कर्ष का आधार कुछ लोग इस बात को मानते हैं कि तीन अलग-अलग मुकुटों अर्थात ''धर्म'' (2 तीमुथियुस 4:8), ''महिमा'' (1 पतरस 5:4) और ''जीवन'' के मुकुटों की बात की गई है (प्रकाशितवाक्य 2:10; याकूब 1:12)। हो सकता है कि ये प्रतिफल के स्तर न हों, बल्कि सभी धर्मियों को मिलने वाली आशिषों का चित्रण हों।

अच्छी बात यह हो सकती है कि सभी को एक जैसे प्रतिफल मिलेंगे। एक घण्टे से लेकर पूरा दिन तक काम करने वाले, अलग-अलग घण्टों में काम करने वालों के दृष्टांत में यीशु ने बताया कि उन्हें एक समान वेतन दिया गया (मत्ती 20:2-15)। उसने यह भी सिखाया कि जिसने सब कुछ दिया उसे अनन्त जीवन मिलेगा (लूका 18:30), परन्तु बड़े प्रतिफलों के बारे में उसने कुछ नहीं बताया। कुछ लोगों को दूसरों से अधिक प्रतिफल देकर परमेश्वर न्याय ही करेगा; परन्तु स्वर्ग पाने का हकदार कोई नहीं होगा। यदि परमेश्वर सभी को एक जैसा प्रतिफल देता है, जैसा कि दृष्टांत में संकेत दिया गया था (मत्ती 20:2-15), तो वह सब पर अपना अनुग्रह ही दिखा रहा होगा।

क्या हम एक दूसरे को पहचानेंगे?

कुछ लोगों की यह बहस है कि यदि हम एक दूसरे को पहचानेंगे, तो हमें स्वर्ग में शोक होगा, क्योंकि हमें इस बात का पता चल जाएगा कि हमारे किसी प्रियजन को स्वर्ग में स्थान नहीं दिया गया है। यह समस्या हो सकती है; हम में से जो लोग स्वर्ग में जाएंगे, वे परमेश्वर के न्याय को वैसे ही समझेंगे जैसे वह समझता है। इस कारण, हम उसके निर्णय से संतुष्ट होंगे।

दूसरे लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि हम एक दूसरे को पहचानेंगे नहीं, क्योंकि हमारी आत्मिक देहें हमारी शारीरिक देहों जैसी नहीं होंगी। धनी मनुष्य ने लाज़र को अब्राहम की गोद में अपनी देहों के त्यागने के बाद ही पहचाना था। थिस्सलुनीके के भाइयों को पौलुस ने बताया था कि वे मसीह के आने के समय उसके आनन्द और महिमा का कारण होंगे (1 थिस्सलुनीकियों 2:19, 20)। यदि वे एक दूसरे को पहचान नहीं सकते थे और उन्हें यह पता नहीं था कि वे उद्धार पाए हुए लोगों में से हैं तो वह यह कैसे कह सका था? स्वर्ग में धर्मी लोग अनन्तकाल तक उद्धार पाए हुए पृथ्वी पर के अपने मित्रों तथा पृथ्वी के सभी उद्धार पाए हुए लोगों के साथ भी संगति का आनन्द लेंगे।

सारांश

स्वर्ग बहुत ही सुन्दर जगह है, जो हमारे सपनों से कहीं सुन्दर है। हमारी सबसे बड़ी अभिलाषा उस आत्मिक क्षेत्र में प्रवेश करने की होनी चाहिए, जहां यीशु है। हम स्वर्ग में जहां एक सुन्दर संगति होगी, अनन्तकाल के लिए एक ये आत्मिक अस्तित्व का आनन्द लेंगे। वहां किसी प्रकार की पीड़ा, शोक या चिल्लाना नहीं होगा। हम सब आनन्दित, प्रसन्न और शांत होंगे।

प्रकाशितवाक्य वाले 1,44,000

क्या यीशु के साथ राज करने के लिए स्वर्ग में केवल 1,44,000 ही जाएंगे और छुड़ाए हुए शेष लोग पृथ्वी के स्वर्गलोक पर रहेंगे?

कुछ लोगों ने प्रकाशितवाक्य के बहुत ही सांकेतिक पदों को अक्षरशः ले लिया है, जिस कारण उनका मानना है कि "1,44,000" लोग ही स्वर्ग में जाएंगे। परन्तु इस अक्षरशः निकाले गए निष्कर्ष में कुछ समस्याएं हैं:

(1) 1,44,000 इस्राएल के बारह गोत्रों को कहा गया है, जिनके दान को छोड़कर एक-एक करके नाम दिए गए हैं (प्रकाशितवाक्य 7:4-8)। इसका अर्थ यह होगा कि कोई अन्यजाति स्वर्ग में नहीं जाएगा।

(2) एक बहुत बड़ी भीड़ के सिंहासन के सामने खड़े होने का वर्णन किया गया है, जिसे कोई गिन नहीं सकता (प्रकाशितवाक्य 7:9)। सिंहासन स्वर्ग में है (प्रकाशितवाक्य 1:4; 3:21; 4:2-10; 5:1, 6-13; 6:16; 7:9-17; 8:3; 12:5; 14:3; 16:17; 19:4, 5), जिसका अर्थ यह है कि स्वर्ग में, केवल 1,44,000 लोग ही नहीं, बल्कि वह भीड़ है।

(3) केवल एक ही आशा है (इफिसियों 4:4), प्रतिज्ञा की हुई एक ही मीरास है, जो कि स्वर्ग है (कुलुस्सियों 1:5; 1 पतरस 1:3, 4)। कुछ लोगों की आशा पृथ्वी, और दूसरों की आशा स्वर्ग होने से दो आशाएं हो जाएंगी, न कि एक।

(4) मसीही लोगों की नागरिकता स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20)। जब तक हम स्वर्ग से दूर हैं, हम परदेशी और यात्री हैं (1 पतरस 2:11)। घर में हम तभी होंगे, जब वहां रहने लगेंगे जहां के हम लोग हैं। इसलिए सभी मसीही लोगों का अनन्त निवास स्वर्ग है, न कि पृथ्वी।

(5) यीशु हमारे लिए जगह तैयार करने के लिए गया है, ताकि जहां वह है वहां हम भी हों (यूहन्ना 14:3)। वह स्वर्ग में इसलिए गया (1 पतरस 3:22) ताकि हमें वहां ले जा सके।

(6) दिखाई देने वाला गोला अर्थात पृथ्वी अस्थाई है न कि सदा तक रहने वाला (2 कुरिन्थियों 4:18)। इसका अर्थ यह है कि यह जाती रहेगी (मत्ती 24:35)। पृथ्वी, जो जलाई जाएगी (2 पतरस 3:10), हमारा अनादि घर नहीं हो सकती।

(7) हमारा अनादि घर स्वर्ग में है (2 कुरिन्थियों 5:1)।

1,44,000 यीशु की कलीसिया के लिए केवल एक संकेत हो सकता है, क्योंकि जो बातें उनके लिए कही गई हैं, वे कलीसिया के लिए भी कही गई हैं। वास्तव में, कलीसिया को कलीसिया के वर्णन के लिए इससे उत्तम शब्द हो ही नहीं सकते।

1,44,000	*विवरण*	*कलीसिया*
प्रकाशितवाक्य 7:3	परमेश्वर के दास	1 पतरस 2:16
प्रकाशितवाक्य 7:4	जिन पर मुहर दी गई	2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 1:13; 4:30

प्रकाशितवाक्य 7:4	परमेश्वर का इस्राएल	गलातियों 6:16
प्रकाशितवाक्य 14:1	सिय्योन पहाड़	इब्रानियों 12:22, 23
प्रकाशितवाक्य 14:1	पिता का नाम लिखा हुआ	इफिसियों 3:15; प्रकाशितवाक्य 3:12
प्रकाशितवाक्य 14:1	यीशु का नाम लिखा हुआ	याकूब 2:7; प्रेरितों 11:26
प्रकाशितवाक्य 14:3	खरीदे हुए	प्रेरितों 20:28
प्रकाशितवाक्य 14:4	अशुद्ध नहीं हुए	इफिसियों 5:27
प्रकाशितवाक्य 14:4	कुंआरे	2 कुरिन्थियों 11:2
प्रकाशितवाक्य 14:4	मेमने के पीछे चलने वाले	यूहन्ना 10:27; 1 पतरस 2:21
प्रकाशितवाक्य 14:4	पहला फल	इब्रानियों 12:23; याकूब 1:18
प्रकाशितवाक्य 14:5	उनके मुंह से कभी झूठ न निकला	

''एक बहुत बड़ी भीड़ जिसकी कोई गिनती नहीं कर सकता'' (प्रकाशितवाक्य 7:9-16) हर युग के छुड़ाए हुए लोगों की हो सकती है, जो इस जीवन से जा चुके हैं। इस भीड़ का वर्णन प्रकाशितवाक्य में वैसे ही किया गया है जैसे नये यरूशलेम में प्रवेश करने वालों का: (1) वे हर जाति में से हैं (7:9; 21:24); (2) उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने हैं (7:9; 19:14); (3) वे मेमने के साथ हैं (7:9; 21:22; 22:1); (4) वे वहां हैं जहां सिंहासन है (7:9; 22:3); (5) वे उद्धार पाए हुए हैं (7:10; 21:27); (6) उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने हुए हैं (7:14; 19:8; 22:14); (7) वे उसकी सेवा करते हैं (7:15; 22:3); (8) वे परमेश्वर के मन्दिर में रहेंगे, जो कि परमेश्वर स्वयं है (7:15; 21:22); (9) वे उसके साथ वास करेंगे (7:15; 21:3); (10) वे भूखे नहीं होंगे (7:16; 22:2); (11) वे प्यासे नहीं होंगे (7:16; 21:6; 22:1); (12) उन्हें सूरज की आवश्यकता नहीं होगी (7:16; 21:23; 22:5); (13) उनके पास जीवन का जल है (7:17; 21:6) और (14) परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा (7:17; 21:4)।

स्पष्टतया केवल 1,44,000 को ही नहीं, बल्कि हम में से सब को जो यीशु की आज्ञा मानते हैं, अनन्तकाल तक स्वर्ग की महिमा पाने की एक ही आशा है। उद्धार पाए हुए सब लोग अर्थात कलीसिया (इफिसियों 5:25-27) और पृथ्वी के सब उद्धार पाए हुए लोगों को स्वर्ग में अनन्त जीवन का फल अर्थात हमारी एक और एकमात्र आशा मिलेगी।